IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का जीवन एवं उनके द्वारा विरचित नाटक 'स्नेहसौवीरभ् में छन्द योजना

Dharam Singh

Assistant Professor of Sanskrit

Govt. College Bhattu Kalan

संस्कृत साहित्य का विश्व साहित्य में अद्वितीय स्थान है। भारतीय विद्वानों ने ही नहीं अपितु अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भी संस्कृत साहित्य की उत्कृष्टता की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। काव्य की विभिन्न विधाओं में सर्वाधिक महत्वर्पूण रूपक है। रूपक रचना को कवित्व की चरम सीमा माना गया है। इसमें श्रव्य व दृश्य दोनों प्रकार के काव्यों की विशिष्टता समाविष्ट है। मेरी रूचि विशेष रूप से रूपकों में होने के कारण मैने डॉ0 भारकाराचार्य त्रिपाठी द्वारा विरचित नाटक के एक अंश का शोध पत्र हेतु चयन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्नेहेहसौवीरम् नाटक के अन्तर्गत रस विवेचन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। फिर भी ज्ञान की सीमाओं को देखते हुए कुछ त्रुटियाँ रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम लेखक के जीवन पर प्रकाश डाला गया है तदुपरान्त उनके नाटक (रूपक) स्नेहसौवीरम् में रस विवेचन को वर्णित किया गया है।

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी – डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का जन्म प्रयाग चित्रकुट अंचल में अवस्थित पाण्डर ग्राम में अनन्त चतुर्दशी □□□□ (23.09.1942) को हुआ था। इनका बचपन ज्योतिष विद्या के पारंगत विद्वान पिता श्री रामप्यारे त्रिपाठी की सारस्वत छाया में बीता। स्नेहसौवीरम् के प्रणेता ने उन्हें जन्मदो ज्योतिषां व्योम्नि वेल्लतत्विषां कोविदो रामवत् सुप्रियः प्राणवद्।[1]

ये कसौटा नरेश के दरबार में प्रधान ज्योतिषी थे। इन्होने स्नातक उपाधि से दीक्षाएं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। मध्यप्रदेश की शासकीय शिक्षा सेवा में छतरपुर, अम्बिकापुर तथा रीवा के स्नातकोतर महाविद्यालय इनके कार्यस्थल रहे। इनकों अनेक पुरस्कारों द्वारा भी अभिनन्दित किया गया है। इन्होने समकालीन संस्कृत रचना धर्मिता से जुड़ी अनके रचनाऐं लिखी जिनमे गद्यद्वादशी, अजाशती, लक्ष्मीलांछनम्, सुतनुकालास्यम्, मृत्कूटम्, निलिम्प काव्यम्– निर्झरिणी, संस्कृतजीवनम, स्नेहसौवीरम् मानसमधु, दूर्वा (24 अंक) भोजभारती, संस्कृत की पहचान, बदले पंख, तौर्यत्रिकम्, लघु–रघु आदि।

उन्होने 1958 में लेखन कार्य आरम्भ किया। वे 2004 में उच्चशिक्षा विभाग म0 प्र0 से विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हो चुके है। डॉ0 भास्काराचार्य त्रिपाठी को उनके लघु काव्य मृत्कूटम् पर दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा उतर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा विशिष्ट पुरस्कारों से अभिनन्दित किया गया है। उन्होंने अपनी संस्कृत कविता पाण्डरग्रामः में जन्मभूमि के संदर्भ में लिखा है :

रजः पाण्डरा नित्यमुदयते मनसि पाण्डरोग्रामः

तृणे–तृणे बन्धुता यत्र पवने च वैरविश्रामः।

साकेत विरहस्य कल्पशः स्वयं कुटुम्बी रामः

आजिगमिषति यम ध्वनीन इव सोयं धन्यो।।[2]

छन्द योजना

काव्य में विशद एवं पूर्ण अभिव्यंजना के लिए अथवा अपनी अभिव्यक्ति को दूसरों के हृदय तक सम्प्रेषित करने के लिये जिन अनेक चित्र संगीतमय संकेतों का आश्रय ग्रहण किया जाता है, उनमें नाद–सौन्दर्य की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्त्व 'छन्द' है। पद्य–रचना का एक माप होता है तथा उसी के अनुसार उसकी सृष्टि भी होती है। इसी माप या बन्धन को 'छन्द' कहते हैं। जिस वाक्य रचना में मात्रा, वर्ण, रचना और विराम सम्बन्धी नियम पाये जायें वह वाक्य रचना छन्द है। इस छन्दों को लयबद्ध रूप में गाया जाता है, जो हृदय के लिये आह्लादकारी होता है। छन्द लय की गति और उसके अविराम स्वर–प्रवाह को समय की सुनिश्चित इकाईयों में बांधकर भावों को अधिक प्रेषणीय बनाता है।

मूल रूप से 'छन्द' शब्द से वेद का ग्रहण होता है। लौकिक छन्दों का आविष्कार महर्षि वाल्मीकि के मुख से सहसा करूण रस के रूप में उद्भूत प्रथम पद्य ही था। जिसके सम्बन्ध में कहा गया है –

'नूतनश्छन्दसामवतारः' पाणिनीय शिक्षा में इसके महत्व को प्रतिपादित करते हुये कहा गया है –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगतः शाश्वती समाः।

यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। वा0 रा0 2.15[3]

'छन्दः पादौ तु वेदस्य' अर्थात् छन्दशास्त्र वेदपुरूष का चरण स्थानीय है। इसके अभाव में वह पंगु जो जाता है अथवा उसके अध्येता का ज्ञान लड़खड़ा जाता है।

'छन्द' शब्द की व्युत्पति :–

'छन्द' शब्द की निष्पत्ति 'चदि आह्लादेन दीप्तौ च'[4] धातु से असुन् प्रत्यय लगाकर तथा चकार को छकार आदेश[5] करने पर होती है। इस प्रकार छन्दस् शब्द का अर्थ है जो हर्ष एवं दीप्ति प्रदान करता है, वह –छन्दय' ळे[6] 'छन्द' शब्द की दूसरी व्युत्पत्ति 'छदि' धातु से मानी जाती है। 'छदि' धातु का अर्थ है – आच्छादन करना या ढ़कना अर्थात् जो विचारों को आच्छादित करे जिसमें विचार निबद्ध हों, वह छन्द है। छन्दस् शब्द की दोनों व्युत्पत्तियां मिलकर इसके स्वरूप को प्रकट करती हैं।

छन्दों का लक्षण :–

काव्य में सौन्दर्य वृद्धि करने के लिये लय और गति से आबद्ध शब्दों की अभिव्यंजना की जाती है। लय तथा गति के समन्वय से की गई रचना ही 'छन्द' कहलाती है। संगीत शब्दों में प्राण डालकर मोहक और हृदयग्राही बना देता है। छन्दों में शब्दों को क्रम से रखा जाता है और इससे काव्य–सौदर्य द्विगुणित हो उठता है।

केवल अक्षर या मात्राओं के अनुरूप रचना किये जाने पर ही वे छन्द नहीं हो जाते जब तक कि उनमें लय तथा गति का संयोजन न हो। क्रमबद्ध शब्दों का जो लय तथा गति से युक्त हों अर्थात् जो गेय हों, छन्द कहते हैं। नाट्यशास्त्र में छन्द का लक्षण इस प्रकार है – 'वह रचना जिसमें अक्षरों तथा मात्राओं की गणना नियत है, यथास्थान जिसमें यति है, जो तालयुक्त चरणों से बंधी होती है, वह छन्द होती है।[7]

स्नेहसौवीरम् नाटक में छन्द योजना इस प्रकार है –

1. अनुष्टुप् –

अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण का पांचवा वर्ण लघु छठा गुरू तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण का सप्तम वर्ण लघु होता है।[8]

ऽ । ऽ ।। ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ। ऽ
आदिसृष्टिरलं धातुः स्नानाय प्रांजलं जलम्।
ऽ। ऽ ।। ऽ ऽऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ । ऽ
उर्वरा सरसा तेन स्यन्दते सन्ततं रसा।।2.2[9]

2 उपजाति :–

उपजाति के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण से बनता है। इसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरू होते हैं।[10]

ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ
भिल्लान्वये लब्ध तनु स्वरूपा
समागता रत्नपुरांचलेभ्य :।
अहं सुता दण्डक वीथि काया
रामार्थिनी नामनिविष्ट कामा।। 2.5[11]

दूतविलम्बित :–

जिसमें नगण, भगण, भगण और रगण क्रम से बारह वर्ण होते हैं, उसे द्रुतविलम्बित छन्द कहते है।[12]

।।। ऽ । ऽ ।। ऽ । ऽ
प्रशमितान्तर–तान्तर सोमिभिः
स विषयी क्रियते न समाधिभिः
तदवलोक कृते छलनिद्रया
किमु द्रृगंचलमीलित मुद्रया।।1.6[13]

3 पृथ्वी :–

जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण, एक सगण, एक जगण, एक सगण, एक यगण, एक लघु और एक गुरू इस क्रम से सत्रह वर्ण होते हैं तो पृथ्वी छन्द होता है।[14]

। ऽ ।।। ऽ। ऽ ।।। ऽ । ऽ ऽ । ऽ
पुरो रटति चातकी गहनकाननान्तर्गता
न सेव चिरसंगिन त्वमपि लप्स्यसे वल्लभम्
इतः कथति पृष्ठतः श्रवणरोदसी कन्दरे
सुताविलयनव्यथा–ज्वलशीलपल्लीरवः।।1.8[15]

4 मालिनी :

जिसके प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, और यगण इस क्रम से पन्द्रह वर्ण होते हैं, मालिनी छन्द होता है।[16]

।। ।।।। ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
स च गिरमनुरून्धन् वत्सलानां गुरूणां
सहज शिशु विहारं स्नेहसारं वितेने।
यजति कुषिकजाते जातु कैशोर केऽसौ
दृषदमरूणपदभ्यां दिव्यनारी चकार। 3.14[17]

5 वसन्ततिलका :–

जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते है उनका क्रम तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरू होते है, वसन्ततिलका छन्द कहलाता है।[18]

ऽ ऽ। ऽ ।।। ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ
हे मारूते ! त्वमसि कश्चन दिव्यधामा
त्रैलोक्य सत्त्वपरिवृत्तममत्वमूर्तिः।
संसारिणः करणकल्मषवृत्तिभाजः
सन्दर्शनेन कृतकृत्य तरान् विधत्से।। 4.6[19]

6 शार्दूलविक्रीड़ित :–

जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और एक गुरू इस क्रम से उन्नीस वर्ण हों तो शार्दूलविक्रीड़ित होता है।[20]

ऽऽ ऽ।। ऽ । ऽ। ।। ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
पूर्व शैशव चापलेन तरणि ग्रासार्द्धकं कूर्वता
सद्यो वादि घषणोत्थ तडिता रूग्णेन भुग्ने हनौ
चिन्ताविश्लथतात कुक्षि पटली मालम्ब्य देव्यां कुटीं
नीतेनाशु मयाऽपि वानरपते स्वास्थ्यं समासादितम्।[21]

8 शिखरिणी :–

जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह वर्ण–एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण, एक लघु और एक गुरू इस क्रम से हो तो शिखरिणी छन्द होता है।[22]

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ।।। ।। ऽ ऽ । ।ऽ
यदेते स्वाहाभिः स्नपितमरूतो वान्ति पुरतो
मृगाली सन्तुष्ठा भ्रमति न मरीचिभ्रममुखी।
तरूस्तम्बे चित्रा विलसति च सौत्री गुणनिका
तदभयर्णे मुक्तिप्रदमिह भवेदाश्रमपदम्।। 3.12[23]

9 स्रग्धरा :–

जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण, भगण, नगण, तीन यगण हों वहाँ स्रग्धरा छन्द होता है।[24] इसमें इक्कीस अक्षर होते हैं।

ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ।।। । । ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ
कान्तारे कान्दिशीकौ करूणरमणि नौ म्लान चेतोह्रषीकौ
सौवीरं लुब्धकीर परिणतरूचिरं सौरभस्यन्द धीरम्।
सस्नेहं स्वादयन्तीं त्वमिह विजय से ज्यायसीमन्नपूर्णा
स्वाहां हव्यप्रवाहां त्रिभूवनवलिता किंच सत्कारलक्ष्मीम्।।5.16[25]

10 वंशस्थ :–

जिसके प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से बाहर अक्षर होते हैं, वह वंशस्थ छन्द होता है।[26]

। ऽ । ऽ ऽ । ।ऽ । ऽ । ऽ
गुरौ प्रयाते रूदितस्य सन्ततं
समापतन्मस्करिणां कृते पुनः।
धृतोच्छला रन्धयतश्च पूरिका
छृशौ मम ध्यामरूची वभूवतुः।। 4.4[27]

11 भुजंगप्रयातम् :–

भुजंगप्रयातम् छन्द में चार यगण के क्रम से बारह वर्ण होते है। इसमें छः वर्णों के बाद यति होती है। इस छन्द की ध्वनि भुजंग की चाल के समान उतार चढाव वाली होती है।[28]

। ऽ ऽ । ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ
समारूह्य यानं महर्षिः प्रयातः
सखा शालिहोत्रोऽपि काशीं प्रयातः।
कबन्धस्य पापीयसो वक्त्रमध्ये
विनोदायनं मुद्गलः सम्प्रयातः।।[29]

12 शालिनी :–

जिसके प्रत्येक पाद में मगण, तगण, तगण और दो गुरू क्रम से ग्यारह अक्षर होते हैं, वह शालिनी छन्द होता है।[30]

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
खानीभूते दन्तुराणां कृमीणां
पम्पानीरे नीलशैवालगर्भे,
स्तोकं तेने भिल्लबालाऽङ् घ्रिमूलं
तेनेन्दु श्रीनिर्मलाऽऽभा च तेने।[31]

13. मन्दाक्रान्ता :–

जिसके प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरू हों तो क्रम से सत्रह अक्षर होते हैं, वह मन्दाक्रान्ता छन्द कहलाता है। इसमें चार, छः छः वर्णों के बाद यति होती है।[32]

ऽ ऽ ऽ ऽ । ।।।। ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ
काचिन्मल्ली परिमलमयीं कीरणासा मृगाक्षी
श्यामा वामा स्फटिकसुदति वेल्लितस्वर्णकेशी।
प्रव्रज्यारौ वनमुपगता कामिनी शङ्कनीया।
विश्वामित्रं छलयितुमना नूतना मेनकेव।[33]

14. स्रग्विणी :–

जिसके चारों पादों में रगण, रगण, रगण, रगण क्रम से बाहर अक्षर हों तो वहाँ स्रग्विणी छन्द होता है।

ऽ । ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
चित्रकूटाचले साधुभिः सङ्कुले
स्निग्धनेत्रेण पस्पर्श नौ राघवः,
माण्डवीजानिसंरक्षणार्थ गुरूं
रक्षितुं भिल्लबालाञ्च मामञ्जसा।[34]

15. पंचचामरः–

जिसके प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरू हो तो पञ्चचामर नामक छन्द होता है। इसमें सोलह अक्षर होते हैं।

। ऽ। ऽ। ऽ । ऽ। ऽ । ऽ । ऽ। ऽ
विराध एकलोऽत्र पापचातुरः क्षुधातुरः
ततश्च दस्यवो विराधगृध्नवोऽधिशेरते।
अयोमुखीह केवला निशाचरीं भयङ्करी
ततो बहुत्र कण्टकान्योमुखानि शेरते
अकम्पनोऽपि कम्पनः कबन्ध संवृतो गिरिः
खराः सदूषणाः शिलाः शरान् किलातिशेरते..... 3.10[35]

16. त्रिष्टुप्ः–

जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं। चारों पादों में 44 अक्षर होते हैं त्रिष्टुप् छन्द कहलाता है।

चटतपव् कपय् प्रदोषेरटितं
चटतव् कपय् निशीथे रटितम्।
गृहदारूणि वद्ध्वा शिखाङ्कुरं
चटतव् कपय् प्रभाते रटितम्।।[36]

17. ललितकृति :–

जिसके प्रत्ये चरण में छः नगण और दो लघु इस क्रम से बीस अक्षर हों तो वह ललितकृति छन्द होता है।

। । । । ।। ।। । । । ।।। । । ।।।।
अनुज सपदि चल कलित सरणि सुरपतिदिशि
विकसितशतदल–सुरभिसलिल–विशदसरसि,
तत इन–कवलनमहिम–पवनसुतसहकृत–
वलिमुखबलपरिवृतकपिपतिरपि निवसति। 5.22[37]

अतः डॉ भास्कराचार्य त्रिपाठी विरचित 'स्नेहसौवीरम्' के छन्दों विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अनुष्टुप्, वसन्ततिलका शार्दूलविक्रीड़ित, गालिनी छन्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। अनुष्टुप् के प्रयोग में तो डॉद्ध भास्कराचार्य सिद्धाहस्त हैं। वसन्ततिलका और शादूर्लविक्रीड़ित जैसे बड़े पद्य भी अभिनय की सफलता के साथ स्वाभाविकता का भी संरक्षण करते है। अतः भास्कराचार्य की छन्दों योजना को हम सभी प्रकार से सफल और सार्थक मानते हैं।

शोधपत्र प्रस्तुतकर्ता :–

धर्मसिंह असिस्टेंट प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय, भट्टू कला (फतेहाबाद)।

(1) मृत्कूटम् – पृष्ठ VII
(2) निर्झरिणी पृष्ठ 77–78
(3) वाल्मीकी रामायण 2.15
(4) धातु पाठ, भ्वा0 पृष्ठ – 2।
(5) सि0 को0 उणादि प्रकरण।
(6) श0 कल्प0 भाग – 2।
(7) नियताक्षरेसम्बन्धे छन्दों यति सम्मिन्वितम्।
निबद्धन्तु पदं ज्ञेय सतालयतनात्मकम्।। ना0 षा0 32–39।
(8) पंचमं लघु सर्वेषु सप्तमं द्विचतुर्थयोः।
गुरू षष्ठं च सर्वेषामेतत् च लोकस्य लक्षणाम्।। सु0 ति0 1.14
(9) स्नेहसौवीरम् अंक 2 श्लोक संख्या 2।
(10) अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ पादौ यदीया वुजपजातयस्ताः। वृ0 र0 3.3।
(11) स्नेहसौवीरम अंक 2 श्लोक 5
(12) द्रुतविलम्बित नभौ भरौ। वृतरत्नाकर 3.49
(13) स्नेहसौवीरम् अंक प्रथम श्लोक संख्या 6
(14) जसौ जसयला तसुग्रहयातिश्च पृथ्वी गुरूः वृतरत्नाकर 3.94।
(15) स्नेहसौवीरम् अंक प्रथम श्लोक संख्या 8
(16) अष्टावाक्षर विरोमणयुक्ता ननमयैः सयैः।
वदान्ति मालिनीनाम् वृतं पन्चदशाक्षरम्।। सुवृमतिलक 1.30
(17) स्नेहसौवीरम् अंक 3 श्लोक संख्या 14
(18) उक्ता बसन्ततिलका तभजा जगौगः वृतरत्नाकर 3.79 ।
(19) स्नेहसौवीरम् अंक 4 श्लोक संख्या 6।
(20) मसजै सततैगन युक्तमेकोन विंशवत् शार्दुलविक्रीड़ितम् प्राहुश्छिन्नं छादससप्तभिः।। सु0 ति0 1.36।
(21) स्नेहसौवीरम् अंक 4 श्लोक संख्या 3
(22) रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलगाः शिखरिणी। वृतरत्नाकर 3.93।
(23) स्नेहसौवीरम् अंक 4 श्लोक संख्या 12
(24) युक्तं मरभनैर्यैश्च त्रिभिः सप्ताक्षरैसिभिः।

छेदैश्च स्रग्धरा वृत्तमेकाविंशाक्षर विदुः सु0 ति0 1.37

(25) स्नेहसौवीरम् अंक 5 श्लोक संख्या 16।

(26) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ। वृतरत्नाकर 3.47 पृष्ठ 114।

(27) स्नेहसौवीरम् अंक 4 श्लोक संख्या 4

(28) भुजंगप्रयाते भवेधैश्चतुर्भि यकारैः। वृतरत्नाकर 3.55।

(29) स्नेहसौवीरम् अंक 5 श्लोक संख्या 1।

(30) शालिन्युक्ता म्नौ गोऽस्धि लोकै। वृतरत्नाकर।

(31) स्नेहसौवीरम् अंक 2 श्लोक संख्या 8।

(32) मन्दाक्रान्त जलधि षड्गैम्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्। वृतरत्नाकर 3.97।

(33) स्नेहसौवीरम् अंक 2 श्लोक संख्या 7।

(34) स्नेहसौवीरम् अंक 3 श्लोक संख्या 6।

(35) स्नेहसौवीरम् अंक 3 श्लोक संख्याा 10।

(36) स्नेहसौवीरम् अंक 2 श्लोक संख्या 1

(37) स्नेहसौवीरम् अंक 5 श्लोक संख्या 22।

सन्दर्भ सूची

1 संस्कृत काव्यषास्त्र का इतिहास पी वी काणे

2 संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय

3 काव्यप्रकाष चौखम्बा विदयाभवन वाराणसी

4 दशरुपक साहित्य भंडार मेरठ

5 नाटयषास्त्र भरतमुनि

6 भाव प्रकाषन

7 साहित्य दपण आचार्य विष्वनाथ

8 स्नेहसौवीरम् **डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी**